सच्ची स्वतंत्रता

-ब्र.कु. सूर्य आबू

प्रत्येक व्यक्ति हर फिल्ड में स्वतंत्रता चाहता है। युवक चाहते हैं वे माँ-बाप से स्वतंत्र रहे, विद्यार्थी चाहते हैं वे टीचर से स्वतंत्र रहे, कई व्यापारी चाहते हैं वे सरकारी बंधनों से स्वतंत्र रहे तो कई अधिकारी चाहते हैं कि वे अपने बड़े अधिकारियों से स्वतंत्र रहे तो बड़े अधिकारी चाहते हैं कि वे नेताओं के बंधनों से स्वतंत्र रहे। कोई कार्य करने की स्वतंत्रता चाहता है तो कोई निर्णय लेने की। यों तो स्वतंत्रता मनुष्य के व्यक्तित्व का व उसकी योग्यताओं या कलाओं का विकास भी करती है, परंतु कहीं-कहीं पर वह मनुष्य को स्वछन्द बनाकर उसे पतन की ओर उन्मुख भी करती है।

कई युवक जो पूर्णत: स्वतंत्र होते हैं, बुरे व्यसनों व बुरे संग में पड़कर अपने सम्पूर्ण जीवन को ही बरबाद कर देते हैं तो कई वैज्ञानिक स्वतंत्र रूप से नये आविष्कार करके संसार को कोई चमत्कारी उपलब्धी करा देते हैं। यों कहें कि विवेकशील व लक्ष्यधारी मनुष्य के लिए स्वतंत्रता वरदान है और निठल्ले, व्यसनी व विवेकहीन मनुष्य के लिए अभिश्राप है।

कई लोग सोचते हैं कि भरत को स्वतंत्र हुए 64 वर्ष होने जा रहे हैं फिर भी हाल बेहाल है। देश ने प्रगति नहीं की.. ये हुआ... ये हुआ.. आप जानते हैं। देश ने प्रगति नहीं की, ये कहना तो गलत है। कई क्षेत्रों में देश अति श्रेष्ठ स्थिति में पहुंच गया है। चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो या आर्थिक क्षेत्र, चाहे व्यापार व उद्योग का क्षेत्र हो या आई.टी. का क्षेत्र, चाहे गाँवों की दशा सुधार की बात हो या घर-घर में पहुंची सुविधाओं की, बहुत प्रगति हुई है।

परंतु पतन हुआ मानवता का। विचार करें यदि हमारे देश के कर्णधार नैतिक मूल्यों से सम्पन्न होते तो क्या दस वर्ष में ही देश को स्वर्ग न बना देते। देश बाहरी रूप से तो स्वतंत्र हो गया, परंतु अन्दर रहने वाले सभी मनुष्य परतंत्र ही बने रहे। बाह्य स्वतंत्रता व आंतरिक परतंत्रता के बेमेल ने हमें वहां नहीं पहुंचने दिया, जहां हमें पहुंचना चाहिए था।

कैसी है ये परतंत्रता? सच पूछो तो आज सभी लोग परतंत्र है। सारा विश्व ही परतंत्र है। परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा मनुष्य सुख चैन से कोसों दूर है। वह परतंत्रता है मनोविकारों की, काम क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार की। वह परतंत्रता है अपने ही स्वार्थ, स्वभाव व संस्कारों की। बुरी परतंत्रता है अपने ही व्यर्थ संकल्पों की।

सब अच्छी तरह जानते हैं कि देश को चलाने वालों को देश की चिंता नहीं, अपने परिवार की चिंता है। उन्हें देश के विकास से प्रेम नहीं, बल्कि धन से प्रेम है। उन्हें परमार्थ की चिंता नहीं, स्वार्थ की चिंता है। राजनीति में चिंतक नहीं आये, चालाक आये। उन्हें जनता के सुख की चिंता नहीं स्वयं का पेट व पेटी भरने की चिंता है। यह स्वतंत्रता नहीं परतंत्रता है। इस सूक्ष्म परतंत्रता से मुक्त होकर ही हम देश को स्वर्ग बना सकते हैं। देश के लिए समर्पित होने वाले कर्णधार ही देश का कल्याण कर सकते हैं।

आओ, हम स्वयं को माया की बेड़ियों से स्वतंत्र करें। स्वयं को स्वयं के ही बंधनों से मुक्त करें। जब तक मनुष्य व्यर्थ संकल्पों के बंधन से मुक्त नहीं हुआ, उसके मन में विश्व कल्याण के विचार आ ही नहीं सकते। यों कहें कि जो मनुष्य स्वयं पर राज्य करना नहीं जानता, वह दूसरों पर या देश पर राज्य नहीं कर सकता।

आज मनुष्य मनोविकारों के इतना अधीन हो चुका है, वह व्यसनों के इतना पराधीन हो चुका है कि उसने ये अधीनता मन से स्वीकार कर ली है। वह इनसे मुक्त होना ही नहीं चाहता। इन मनोविकारों ने व व्यसनों ने मनुष्य की मन, बुद्धि को इतना खोखला बना दिया है कि वह सत् कर्म करने का विवेक ही खो बैठा है। चाहे कोई कितने भी बड़े पद पर आसीन हो, इन बुराइयों ने उससे विश्व कल्याण की शक्ति ही छीन ली है।

विवेकशील व लक्ष्यधारी मनुष्य के लिए स्वतंत्रता वरदान है और निठल्ले, व्यसनी व विवेकहीन मनुष्य के लिए अभिश्राप ।

अब स्वयं ज्ञान सागर व योगेश्वर परमपिता आकर मनुष्यात्माओं को राजयोग सिखाकर माया से स्वतंत्र करा रहे हैं। व आत्माओं में बल भरकर उनसे विश्व कल्याण करा रहे हैं... उनकी कुछ बातें प्रस्तुत है।

भगवानुवाच... 'काम महाशत्रु है'। यह सत्य है कि काम ने ही सारा काम बिगाड़ा है। इसी के कारण कई लोग घरो में ही परतंत्र हैं। इसने मनुष्य को देहभान की जंजीरों में जकड़ लिया है। अति काम वासना से ही रोग-शोक बढ़ रहे हैं, शरीरों में रोग निरोधक शक्ति नष्ट हो रही है। मन बुद्धि निर्बल हो रहे हैं और मनुष्य तनाव व अवसाद के अधीन होता जा रहा है। जब मनुष्य देवता था, वह स्वतंत्र था। वह अत्यंत सुखी था, निरोग था, धन-धान्य से सम्पन्न था। काम के अधीन होकर उसने सब कुछ गंवा दिया।

माया का 2500 वर्ष से राज्य रहा, उसने सबको अपने अधीन कर लिया। राजा हो या प्रजा सभी उसके चंगुल में आ गये। अब उससे मुक्ति होने के लिए हमें ईश्वरीय शक्ति चाहिए जो राजयोग से मिलती है।

मोह की अधीनता से सब परिचित हैं। लोभ ने मनुष्य को अपने वश करके जग का बड़ा ही अकल्याण किया है। धन ही सब कुछ है, इस विचार ने स्वार्थ को बढ़ाकर मनुष्य को पराधीन कर दिया। अब आत्मा के मूल पवित्र स्वरूप को पहचान कर इन विकारों से मुक्त होकर ही मनुष्य सच्ची स्वतंत्रता का सुख पा सकता है।

ध्यान दें - आपको अपने ही किसी स्वभाव संस्कार की पराधीनता तो नहीं है। क्रोधी स्वभाव, जिद्दी स्वभाव, आलस्य का स्वभाव या दु:खी रहने का स्वभाव कहीं आपको परवश तो नहीं कर रहा है। यदि आप अपने ही स्वभाव के वश हैं तो आप दूसरों को वश कैसे करेंगे। ये स्वभाव की अधीनता आपके विकास व सफलता के मार्ग में दीवार है।

यदि आप अपने ही अहं वश बार-बार टकराव में आ जाते हैं या आप है तो नेता, परन्तु अभिमान के वश हैं तो आप लोकप्रिय नहीं हो सकते। ये अभिमान की अधीनता भी बड़ी भयावह है, आप इससे मुक्त हो तो सफलता आपके चरण चूमेगी। अब हमें अपने महान देश भारत को माया की परतंत्रता से मुक्त करके स्म्पूर्ण स्वतंत्र बनाना है। हमें भगवान ने ये काम दिया है। हम उनकी श्रीमत पर चलकर पहले स्वयं को माया की पराधीनता से मुक्त कर रहे हैं। माया से स्वतंत्र होने पर प्रकृति की स्वतंत्रता भी स्वत: ही प्राप्त हो जाती है। सत्य तो यही है कि 'स्व' के मूल स्वरूप को जानकर उसमें स्थित होने से 'स्व' का तंत्र स्वत: ही स्थापित हो जाता है। हम ऐसे स्वतंत्र बने कि जीवन खुशहाली व सफलता से भरा हो, वातावरण को ही खुशी व हल्केपन से भर दें तब हर आंगन दैवी गुणों की सुगंध से महक उठेगा और भारत धन-धान्य से परिपूर्ण देव लोक स्वर्ग में परिणत हो जायेगा। सच्चची स्वतंत्र तब ही मिलती है जब हम माया से स्वतंत्र हो जाते हैं।

शिरूर। 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.सूर्य, नव-निर्वाचित नगराध्यक्षा एवं ब्र.कु.अर्चना।

मंगलगंज (खीरी)। मेले में आध्यात्मिक ज्ञान-योग चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए जिला पंचायत सदस्य दिनेश गुप्ता, ग्राम प्रधान विपिन बिहारी, ब्र.कु.योगेश्वरी साथ में हैं ब्र.कु.उमा तथा अन्य।

सुरेन्द्रनगर। 'सद्भावना सम्मेलन' कार्यक्रम को सम्बोधित करने के पश्चात् ग्रुप फोटो मे हैं मुख्यमंत्री नरेन्द्रमोदी, ब्र.कु.हर्षा, ब्र.कु.अहूजा, ब्र.कु.कोमल तथा अन्य।

बुटवल (नेपाल)। राज्य रक्षा मंत्री रामवचन यादव को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं ब्र.कु.कमला, ब्र.कु.नारायणी, ब्र.कु.नारायण तथा अन्य।

बिलासपुर। सरस्वती शिशु मंदिर में 'मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म' विषय पर प्रवचन देते हुए ब्र.कु.मंजू एवं ध्यान पूर्वक सुनते हुए शिक्षकगण।

वलसाड। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए विधायक दौलत भाई, महिला नागरिक बैंक की अध्यक्षा अर्चना, चीनी मिल के अध्यक्ष अरविंद भाई, ब्र.कु.चंद्रिका, ब्र.कु.रंजन।

लालगंज, रायबरेली। प्रमुख सचिव के.एस.सिंह को आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.अलका।